



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड I

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 53]

नई दिल्ली, बुधवार, मार्च 11, 1998/फाल्गुन 20, 1919

No. 53]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 11, 1998/PHALGUNA 20, 1919

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 मार्च, 1998

प्रारंभिक निष्कर्ष

विषय : चीन और जापान जनवादी गणराज्य से विटामिन-सी के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच—प्रारंभिक निष्कर्ष

10/1/97/ए. डी. डी. .—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति-निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए

(क) क्रियाविधि

1. मौजूदा जांच के संबंध में निम्नलिखित क्रियाविधि का पालन किया गया है :

क. निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके पश्चात् प्राधिकारी कहा जाएगा) को उपर्युक्त नियमावली के तहत मैसर्स अम्बालाल मागभाट एंटरप्राइसिज लि. से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें जापान और चीन जनवादी गणराज्य मूल के या वहां से निर्यात किए गए विटामिन-सी (एसकोरबिक एसिड) के पाटन का आरोप लगाया गया है।

ख. आवेदन पत्र की प्रारंभिक जांच से कुछेक कमियों का पता चला है जो याचिकाकर्ताओं को बतला दी गई हैं।

ग. प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त प्रमाण के आधार पर, जापान और चीन (जिसे इसके बाद सम्बद्ध देश कहा जाएगा) मूल के या वहां से निर्यात किए गए कथित पाटित आयातों के विरुद्ध जांच शुरू करने का निर्णय लिया है। प्राधिकारी ने उक्त नियमों के उप-नियम 5 (5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले पाटन के आरोप प्राप्त होने के विषय में सम्बद्ध देशों के दूतावासों को सूचित कर दिया था।

घ. प्राधिकारी ने 26-5-97 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण, में प्रकाशित किया गया था जिसके द्वारा जापान तथा चीन मूल के अथवा वहां से निर्यातित विटामिन सी के आयातों के संबंध में प्रतिपाटन जांच शुरू की गई।

ङ. प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों/आयातकों (जिनका विवरण याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध कराया गया था) को भेजी

और नियम 6(2) के अनुसार 40 दिन के भीतर उन्हें लिखित रूप में अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया।

च. प्राधिकारी ने भारत में विटामिन-सी के ज्ञात आयातकों को सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और उन्हें सलाह दी कि पत्र मिलने के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराएं।

छ. केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सी बी ई सी) से भी अनुरोध किया गया कि जांच की अवधि अर्थात् अप्रैल से दिसंबर, 96 के लिए अपेक्षित सभी आगम बिलों की प्रतियाँ उपलब्ध कराएं परन्तु सी. बी. ई. सी. से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई।

ज. प्राधिकारी ने उक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की प्रतियाँ सम्बद्ध देशों के सभी ज्ञात निर्यातकों तथा दूतावासों को प्रदान की।

झ. प्राधिकारी ने निम्नलिखित निर्यातकों को अपेक्षित जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली भेजी :

- * तकेदा कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि., ओसाका, जापान
- * हेबेई वैल्कम फार्मा कं., शिंगाजि हुआंग, चीन
- * नेशनल कैमिकल्स एंड फार्मास्युटिकल्स कारपोरेशन शिजीया हुआंग, चीन

निम्नलिखित निर्यातकों ने निर्धारित बढ़ाई गई समयावधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर भेजा :

1. तकेदा कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि., ओसाका, जापान (टी सी आई) मैसर्स
तकेदा विटामिन्स एंड फूड एशिया प्रा. लि., सिंगापुर (टी वी एफ ए)
2. हेबेई वैल्कम फार्मा कं., शिंगियाज हुआंग, चीन

ज. अनेक निर्यातकों, आयातकों तथा उपभोक्ताओं ने समय बढ़ाने के लिए अनुरोध किया था जिसके लिए प्राधिकारी ने 15-10-97 तक समय बढ़ाने का अनुमति दी थी। प्राधिकारी का यह निश्चित मत है कि सभी हितबद्ध पार्टियों से उत्तर प्राप्त करने अथवा उत्तर की प्रतीक्षा करने का अथवा उन हितबद्ध पार्टियों को अतिरिक्त समय देने का कोई प्रावधान नहीं है जिनसे प्राधिकारी ने निश्चित तौर पर पहले सूचना नहीं मांगी थी।

ट. जापान और चीन के नई दिल्ली स्थित दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरू करने के सम्बन्ध में सूचना दी गई थी। जिसमें यह अनुरोध किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का निर्धारित समय के अंदर उत्तर देने को मलाह दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की प्रतियाँ ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की एक सूची के साथ दूतावासों को भी भेजी गई थी।

ठ. भारत में विटामिन-सी के निम्नलिखित ज्ञात इंडेंटिंग एजेंटों तथा आयातकों को भी एक प्रश्नावली भेजी गई थी जिसमें नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगी गई थी :

1. एंगानो फैंच ड्रग्स (इंस्टर) लि. बंगलौर
2. अमरीकन रेमाडीज मद्रास
3. भारत लैबोरेट्री मपनायर्स, मुम्बई
4. किस्टल फार्मास्युटिकल्स, कलकत्ता
5. सी जे शाह एंड कम्पनी, मुम्बई
6. कोनसेप फार्मा लि., मुम्बई
7. चैमी फार्मा
8. दिलीप कुमार एंड कम्पनी, मुम्बई
9. ईरोज फार्मा, बंगलौर
10. फोटर्स (आई) लैब्स प्रा. लि., मद्रास
11. ग्लैक्सो इंडिया लि., मुम्बई
12. ग्रेक्वोर फार्मास्युटिकल्स लि. नई दिल्ली
13. खन्ना फार्मा, दिल्ली
14. क. मेघन्तीलाल एंड कम्पनी, मुम्बई
15. लाफे कैमिकल्स एंड कम्पनी, मुम्बई
16. लालचन्द भीमराज, मुम्बई
17. मेरिट आर्गैनिक्स लि., मुम्बई
18. भरकरी लैब्स लि., मुम्बई
19. मेडले लैब्स, मुम्बई

20. मेडी फार्मा इन्स हाऊस, मुम्बई
21. नेमो फार्मा प्रा. लि., मुम्बई
22. पूजा एंटरप्राइजेज, मुम्बई
23. प्रदीन कुमार एंड कम्पनी, मुम्बई
24. फार्मास्युटिकल इंडिया, मुम्बई
25. रेकॉन लि., बंगलौर
26. रेमिडैक्स फार्मा प्रा. लि., बंगलौर
27. स्ट्राईड फार्मा लि., नई दिल्ली
28. सनवेज प्रा. लि., मुम्बई
29. तारु एंटरप्राइजेज, मुम्बई
30. तुराखा ब्रदर्स, मुम्बई
31. टी एच ठाकुर फार्मा लैब्स, मुम्बई
32. टैयलेट्स इंडिया लि., मद्रास
- ज. याचिकाकर्ता मैसर्स अम्बालाल साराभाई लि. बड़ौदा और अन्य गैर-याचिकाकर्ता मैसर्स जयन्त विटामिन्स लि. से बरेलू उद्योग के संबंध में सूचना मांगी गई थी। आवश्यक समझी गई सूचना का प्राधिकारी ने सत्यापन किया।
- झ. मैसर्स जयन्त विटामिन्स लि. द्वारा कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई थी।
- ञ. स्वीकार्य लेखा-मिद्धांतों तथा याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर उत्पादन की ईष्टतम लागत और सामान्यतः विटामिन-सी बनाने और बेचने की लागत का पता लगाने के लिए प्रारम्भिक निष्कर्षों के उद्देश्यों के लिए लागत जांच भी की गई ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या डम्पिंग मार्जिन से कम पाटन-रोधी शुल्क बरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा;
- त. यह जांच 1 अप्रैल, 1996 से 31 दिसंबर, 1996 तक की अवधि के लिए की गई।
- ख. याचिकाकर्ता के विचार
 2. याचिकाकर्ताओं ने अपनी याचिका में और बाद में निर्दिष्ट प्राधिकारी को पेश किए गए कागजातों में निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं :
डम्पिंग पर :
 - I. चीन में, एककों से कोई श्रम और विद्युत लागत नहीं ली जाती है जिससे वे कीमतें कम कर सकते हैं एवं त्वरित दुर्लभ मुद्रा के लिए वस्तुओं को डम्प कर सकते हैं और विशेषव्यापी बाजार शेयर अर्जित कर सकते हैं।
 - II. चीनी निर्यातकों ने बाजार हिस्सा, जो 1980 में 1% से कम था, वर्ष 1996 में बढ़कर लगभग 20% तक पहुंचा दिया।
 - III. चीन से आयातित विटामिन-सी की कीमतें एक वर्ष में 424 रु. प्रति कि.ग्रा. से गिरकर 258 रु. प्रति कि.ग्रा. हो गई;
 क्षति के बारे में :
 - I. विटामिन सी एक औषध है, जिसकी कीमतें औषध कीमत (नियंत्रण) आदेश के अन्तर्गत नियंत्रित होती हैं और कीमत नियंत्रण 1970 से लागू है;
 - II. देश में विटामिन-सी के आयात की अनुमति ओ जी एन के तहत व्यापार नीति के अंतर्गत उपलब्ध है।
 - III. "हज्वरी, 1996 के महीने में सीमाशुल्क टैरिफ में 65% से 40% तक सामान्य कमी किए जाने से उक्त उत्पाद को भारत में कम कीमतों पर बेचने में मदद मिली;
- IV. मैसर्स जयन्त विटामिन सी विटामिन सी के उत्पादकों ने सितम्बर, 1996 में प्रचारन बन्द कर दिया है,
- V. मैसर्स जिंदल (2000 टी) और नाटकों (4000 टी) ने अपनी नई परियोजनाएं छोड़ दी हैं;
- ग. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार
 3. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार, जिन्होंने प्राधिकारी को जवाब दिया है, निम्नानुसार हैं :—
निर्यातक
 1. मैसर्स टी रो आर्. जापान
निर्निर्माता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से कोई विचार व्यक्त नहीं किए गए हैं। तथापि, मैसर्स टाकेडा विटामिन्स और फूड एशिया प्रा. लि. सिगापुर, टाकेडा केमिकल्स इंडस्ट्रीज लि. जापान की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी द्वारा व्यक्त किए गए विचार नीचे दिए गए हैं :—

- ओसाका में टी सी आई को भारत में व्यापार से कोई लेना देना नहीं है;
- टी सी आई, जापान द्वारा विनिर्मित विटामिन "सी" और खाद्य-एडिटिव्स की बिक्री हेतु कोरिया, थाईलैंड और जापान को छोड़कर सभी एशियाई देशों को कवर करने का कार्य टी वी एफ ए को सौंपा गया,
- टी सी आई को डम्पिंग के आरोप और जांच से मुक्त किया जाना चाहिए;
- विटामिन सी की मांग और आपूर्ति में लगातार असंतुलन से कीमतों में तेजी से गिरावट की प्रवृत्ति बनी हुई है;
- वर्ष 1995 से विटामिन-सी की कीमतें लगातार गिर रही हैं और उनकी कीमतें हमेशा अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों की तर्ज पर रह रही हैं;
- विटामिन-सी की कुल मांग स्थानीय उत्पादन से अधिक है;
- विश्व बाजार में चीन विटामिन-सी के सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरा है;
- यदि घरेलू उद्योग यह समझता है कि विटामिन-सी की डम्पिंग हो रही है, तो अपने दावे को साबित करने के लिए वह माल को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रचालित कीमतों से अधिक कीमतों पर निर्यात करने की स्थिति में होंगे;

2. मैसर्स हेबर्ड खेलकम फार्मा कं., चीन

मैसर्स हेबर्ड खेलकम फार्मा कं., चीन ने 1996 के दौरान भारत को किए गए निर्यातों से संबंधित माल सूचियां बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास द्वारा प्रमाणित कराकर संलग्न की हैं। उन्होंने यह भी बताया है कि भारत को उक्त उत्पाद का निर्यात उसी कीमत पर किया गया है, जिस कीमत पर उसकी बिक्री चीनी घरेलू बाजार में की गई है।

आयातक

1. मैसर्स दिलिप कुमार एंड कंपनी ने कहा है कि—
मैसर्स अम्बालाल साराभाई भारत में विटामिन-सी का एक मात्र विनिर्माता है और उनकी क्षमता कुल भारतीय मांग की 20% से कम है।
— जर्मनी, स्विस्, जापान और चीन में विटामिन-सी की बहुत बड़ी उत्पादन क्षमता इस उत्पाद की आपूर्ति और अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों पर प्रभाव डालती है।
— कि जापान की सामग्री चीन की सामग्री के मूल्यों की तुलना में अधिक महंगी है और वे जापान की सामग्री पर किसी पाटन-रोधी शुल्क लगाने का कड़ा विरोध करते हैं।
— यह मुजात तथ्य है कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में स्विस् और जर्मनी की सामग्री उन्हीं मूल्यों पर उपलब्ध है जिन मूल्यों पर जापान की सामग्री उपलब्ध है।
— प्राधिकारी चीन की सामग्री पर प्रतिपाटन शुल्क लगा सकता है क्योंकि सी आई एफ मूल्य काफी कम है जो भारतीय विनिर्माताओं को प्रभावित करते हैं;
2. ग्लैक्सो : कंपनी ने निवेदन किया है कि दोनों भारतीय विनिर्माताओं की क्षमता मांग की तुलना में काफी कम है और मांग की अधिकांश मात्रा आयातों के जरिए पूरी की जाती है जब तक इन दो घरेलू विनिर्माताओं से आपूर्ति समुचित रूप से होती थी तब तक सारी खरीद उन्हीं से करते थे उससे पहली बार आयात मार्च 96 में 539 रुपया प्रति कि. ग्रा. की प्रचलित घरेलू कीमत की तुलना में 631 रुपया प्रति कि.ग्रा. पहुंच मूल्य पर किया गया था। कम कीमत केवल चीन और जापान से आपूर्तियों के मामले में ही नहीं अपितु अन्य यूरोपीय आपूर्तिकर्ताओं जैसे तोची हॉफमन, टु मार्क एवं बी ए एम् एफ के मामले में भी रही।
3. उठाए गए मुद्दों की जांच
नियामकों आयातकों, याचिकाकर्ताओं, उपभोक्ताओं एवं अन्य हितवद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए वक्तव्यों की जांच एवं उन पर विचार किया गया और इस अधिनियम में इस अधिनियम में उक्त जगहों पर विचार किया गया है।
4. विचाराधीन उत्पाद और जांच का दायरा
5. मौजूदा जांच में चीन और जापान का क्या क्या से निर्यातित विटामिन-सी/एसकोर्विक एसिड पर विचार किया गया है। यह उत्पाद सीमाशुल्क अधिनियम के शीर्ष 2936.27 का अन्वयन वर्गीकृत है। तथापि यह वर्गीकरण केवल संकेतक है और मौजूदा जांच के कार्य क्षेत्र के लिए किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।
- च. समान वस्तुएं
6. घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तुएं घरेलू उत्पादों से विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु हैं। याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि भारत में घरेलू उद्योग द्वारा इस उत्पाद का उत्पादन केवल विनिर्माताओं की तरह है। इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित किए गए और बेचे गए विटामिन-सी को नियम 2(घ) की परिभाषा के अनुसार घरेलू उत्पाद से आयातित विटामिन-सी के समान वस्तु माना जाये।
- छ. घरेलू उद्योग
7. याचिका घरेलू उद्योग का नाम है जयन्त विटामिन्स प्राइवेट लि. ने दर्ज की है। याचिकाकर्ताओं ने जांच अवधि के दौरान 344 मी. टन का उत्पादन किया है जो 454 मी. टन के कुल उत्पादन का लगभग 76% है। मै. जयन्त विटामिन्स लि. ने भी अप्रैल-सितम्बर, 1996 के दौरान केवल 110 मी. टन विटामिन-सी का निर्यात किया है तथापि उसने सितम्बर 1996 से अपना संयंत्र बंद कर दिया है और याचिकाकर्ता नहीं है। देश में विटामिन-सी का एकमात्र निर्माता होने के कारण याचिकाकर्ता उक्त नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग है।

ज. सामान्य मूल्य

8. प्राधिकारी ने निर्यातकों को सूचना मुहैया कराने के लिए प्रश्नावलियां भेजी ताकि सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जा सके। मै० टी सी आई, जापान ने कोई सीधी जानकारी इस आधार पर नहीं दी है कि भारत में व्यापार में उसकी कोई भूमिका नहीं है। तथापि, टी सी आई, जापान की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी मै० यकेदा विटामिन एण्ड फूड एसिया टे लि० सिंगापुर (टीबीएफए) ने टी सी आई की एक सहायक कंपनी के रूप में अपना प्रत्युत्तर दायर किया है। प्राधिकारी ने पाया कि टी बी एफ ए ने केवल सिंगापुर के घरेलू बाजार के बारे में जानकारी दी है और जापान के बाहे में जानकारी नहीं दी है। इसके अलावा, उसने मूल्य ढांचे और बिक्री व्यवस्था के बारे में भी कोई जानकारी इस दावे के आधार पर नहीं दिया है कि इससे उसके संविदाकारों के साथ करार की गोपनीयता भंग होगी। ताकेदा ने भी इस आधार पर उत्पादन लागत की जानकारी नहीं दी है कि वह केवल व्यापारी/निर्यातक है और वह स्वयं उत्पाद का निर्माण नहीं करता है। टी बी एफ ए ने अपने पी एण्ड एल खाते के कुछ उद्धरण दिए हैं किन्तु टीसीआई, जापान के बारे में कोई वित्तीय जानकारी नहीं दी है। यह भी उल्लेखनीय होगा कि फैक्ट्री से माल निर्गत होने के पश्चात् लगी लागत के संबंध में भी सूचना की गोपनीयता का दावा किया गया है और इसे प्रश्नावली के जवाब में शामिल नहीं किया गया है।

प्राधिकारी यह बात भी नोट करते हैं कि ताकेदा द्वारा भेजी गई सूचना चुनिंदा है और बिना ब्यौरे का है और निर्यातक देश के घरेलू बाजार में तुलनीय सामान्य कीमत के निर्धारण में किसी तरह से मददगार नहीं होगा। यद्यपि सिंगापुर के घरेलू मूल्यों के संबंध में कुछ सूचना उपलब्ध कराई गयी है, तथापि प्राधिकारी मानते हैं कि यदि सामान केवल निर्यातक देश के जरिए भेजा जाता है तो धारा 9क(1) ग के प्रावधानों के अनुसार मूल देश में प्रचलित मूल्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाना आवश्यक है।

उपरोक्त के आधार पर प्राधिकारी ने माना है कि टी सी आई ने मौजूदा जांच में सहयोग नहीं दिया है। प्राधिकारी ने उक्त नियम 8 के अनुसार रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

II. मै. होबेई वेलकम फार्मा कंपनी, चीन ने निर्यात के संबंधित तीन बीजक मुहैया कराने के अतिरिक्त कंपनी ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का माहवार ब्यौरा प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार घरेलू बाजार में बिक्री दर्शाने वाला एक अन्य ब्यौरा प्रस्तुत किया है जिसमें घरेलू बाजार में बेचे गए खेपों/बिस्कों के सहायक ब्यौरे नहीं हैं। कंपनी ने वित्तीय लेखों के अनुरूप कुल उत्पादन लागत का ब्यौरा नहीं दिया है।

III. प्राधिकारी ने उल्लेख किया है कि चीन का प्रत्युत्तर निर्यातकों के लिए निर्धारित प्रश्नावली के अनुरूप नहीं है। कंपनी ने जांच अवधि के लिए अपने घरेलू बिक्री से संबंधित सहायक दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए हैं और न ही घरेलू कीमत के लिए कोई समायोजन का दावा किया है। इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण विनिर्माता देश में विटामिन-सी के उत्पादन की अनुमति लागत के अलावा उप धारा (6) के अधीन निर्मित नियमों के अनुसार यथा निर्धारित प्रशासनिक बिक्री एवं सामान्य लागतें तथा लाभों में उचित वृद्धि के आधार पर किया गया है।

झ. निर्यात मूल्य

9. याचिकाकर्ता ने जापान तथा चीन से उत्पाद का निर्यात मूल्य दर्शाने के लिए जाँच-अवधि के लिए "कैमिकल वीकली" की प्रति प्रस्तुत की है। लेकिन, प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस, कलकत्ता से प्राप्त अप्रैल-दिसम्बर, 96 की अवधि के लिए उपलब्ध सरकारी आंकड़ों पर विश्वास किया है। सी आई एफ मूल्य जापान के लिए 319.89 रुपए प्रति कि०ग्रा० तथा चीन के लिए 296.26 रु० प्रति कि०ग्रा० आंके गए हैं। मै० टी बी एफ ए द्वारा समुद्रपारी भाड़ा, बीमा, नौवहन प्रभारों, चढ़ाई-उतराई इत्यादि के लिए "एफ ओ बी मूल्य के बाद" समायोजन प्रस्तुत किए हैं। प्राधिकारी ने टी पी एफ ए द्वारा किए गए दावों के आधार पर समायोजनों को अनुमति दे दी है। इसी प्रकार एफ ओ बी मूल्य का आकलन करने के लिए चीनी निर्यातकों द्वारा यथा-प्रस्तुत (जिंजिंग से मुम्बई तक के) समुद्रपारी भाड़े तथा निकासी प्रभार के संबंध में समायोजनों की अनुमति दी गई है।

अ. तुलना

10 सामान्य मूल्य तथा निर्यात मूल्य के बीच उचित तुलना के उद्देश्य से प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रपत्र में तथा तरीके से निर्यातकों से प्राप्त पूर्ण प्रत्युत्तर के अभाव में याचिकाकर्ता, निर्यातकों, आयातकों तथा प्राधिकारी के पास उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना पर ध्यान दिया जाता है। प्राधिकारी ने प्रत्येक निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य की तुलना भारत निर्यात मूल्य (दोनों ही कारखाना स्तर पर) के साथ की है तथा निम्नलिखित डम्पिंग मार्जिन पर पहुंचे हैं :—

(रु०/कि०ग्रा०)

देश	डम्पिंग मार्जिन**
जापान (सभी निर्यात)	58.10
चीन (सभी निर्यात)	48.75

*निर्यात मूल्य का प्रतिशत

ट. क्षति

11. ऊपर के नियम 11, अनुबंध-II के अंतर्गत जब जाँच-परिणाम में किसी क्षति पर पता चलता है तब ऐसे-जांच परिणाम में घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चलता है तब ऐसे जाँच-परिणाम में घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण करते समय सभी सम्बद्ध तथ्यों को ध्यान में रखा जाएगा, जिनमें पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में ऐसी ही वस्तुओं की कीमतों पर उनका प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों का परिणामी प्रभाव शामिल है। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव विचार करते समय यह विचार करना आवश्यक है कि क्या ऐसी ही वस्तुओं की भारत में कीमत की तुलना में पाटित आयातों से कीमत में महत्वपूर्ण रूप से कमी करनी पड़ी थी या क्या अन्य प्रकार से ऐसे आयातों के प्रभाव से एक महत्वपूर्ण स्तर तक कीमतों में

कमो आई या कीमतों में वृद्धि रुक गई, जिनमें अन्यथा महत्वपूर्ण हद तक वृद्धि हुई होती।

नियमावली के अनुबंध II के नियम (III) में यह अपेक्षा की गई है कि यदि एक से अधिक देशों में होने वाले उत्पाद के आयात की एक ही साथ प्रतिपाटन जाँच हो रही है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन करेगा। लेकिन ऐसा मूल्यांकन तभी किया जा सकता है यदि यह निर्धारित किया जाता है कि प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा भारत में समान वस्तु के आयात की तीन प्रतिशत है, तथा

वर्तमान मामले में, प्रत्येक निर्यातक तथा प्रत्येक देश के संबंध में डम्पिंग मार्जिन निर्धारित सीमा से अधिक है। इसके अलावा, आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन, आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा संबंधी शर्तों की दृष्टि से उचित है। अतः प्राधिकारी द्वारा इन आयातों का घरेलू उद्योग पर पड़े प्रभाव का संचयी मूल्यांकन किया गया है।

भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के पड़ने वाले प्रभाव की जाँच करने के लिए प्राधिकारी ने ऊपर नियमों के अनुबंध II (IV) के अनुसार ऐसे सूचकों पर विचार किया है, जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है, जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, कुल बिक्री आय, डंपिंग मात्रा तथा मार्जिन आदि। (क) (पाटित आयातों की मात्रा: चीन से आयात 44.8 मी० टन (1994-95) से बढ़कर 59.7 मी० टन (1995-96) तक हो गए और जाँच अवधि (अप्रैल-दिसम्बर, 1996) के दौरान ये आयात 294 मी० टन (वार्षिक आधार पर 392 मी० टन) के थे और जापान के मामले में आयात शून्य स्तर (1994-95) से बढ़कर 0.7 मी० टन (1995-96) तक हो गए और जाँच अवधि के दौरान इनमें 101.06 मी० टन (वार्षिक आधार पर 135 मी० टन तक की वृद्धि हुई। वर्ष 1996-97 के दौरान उत्पाद के आयात में वृद्धि वार्षिक चीन के संबंध में लगभग 656% और जापान के संबंध में 19668% की हुई। उपरोक्त प्रवृत्ति से यह पता चलेगा कि उक्त देशों से आयातों की मात्रा में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

देश की कुल मांग में जापान का बाजार हिस्सा 1995-96 में 0.08% से बढ़कर जाँच-अवधि के दौरान 10.61% तक हो गया। चीन के मामले में यह वृद्धि 1995-96 में 6.49% से लेकर जाँच-अवधि के दौरान 29.41% तक हो गयी थी।

(ख) घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक:

(1) उत्पादन: वर्ष 1994-95 के दौरान घरेलू उद्योग का उत्पादन 1030.6 मी० टन (अम्बालाल साराभाई एन्टरप्राइजेज का 469 मी० टन और जयन्त विटामिन्स लि० का 561.6 मी० टन) था। वर्ष 1995-96 में उत्पादन में 918.4 मी० टन (अम्बालाल साराभाई एन्टरप्राइजेज के मामले में 286 मी० टन और जयन्त विटामिन्स लि० के मामले में 432.4 मी० टन) तक की कमो आई थी। जाँच अवधि के दौरान संयुक्त उत्पादन में 496.3 मी० टन (अम्बालाल साराभाई एन्टरप्राइजेज के मामले में 386 मी० टन और जयन्त विटामिन्स लि० के मामले में 110.3 मी० टन) तक की कमो हुई थी। घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 1995-96 में 91.2% से घटकर जाँच-अवधि के दौरान लगभग 48% तक हो गया। मैसर्स जयन्त विटामिन्स लि० को उक्त उत्पाद के पाटन के कारण अक्टूबर, 1996 से अपने उत्पादन संबंधी क्रियाकलाप बंद करने के लिए बाध्य किया गया था और उसने पाटनरोधी जाँच में भाग नहीं लिया था।

(2) कीमतों में कमी करना: याचिकाकर्ता द्वारा यह तर्क दिया गया है कि अप्रैल, 1996 से संबंधित देशों द्वारा देश में अत्याधिक कम कीमतों पर उक्त वस्तु का पाटन किया जा रहा है जो कि 296/- रु० प्रति कि०ग्रा०-320/- रु० प्रति कि०ग्रा० (सी०आई०ए०एफ०) के बीच है और इसका उद्देश्य स्थानीय प्रतिस्पर्धा को खत्म करना है। शुल्क को हिसाब में लेने के बाद उतराई के बाद की कीमत 431/- रु० प्रति कि०ग्रा० से 465/- रु० होती है जबकि जाँच अवधि के दौरान औसत बिक्री की कीमत 537/- रु० कि०ग्रा० थी। इससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि कीमतों में कमी की गई। जिसके परिणामस्वरूप बिक्री की मात्रा में भी गिरावट हुई है।

(3) बिक्री की मात्रा में गिरावट:— देश में विटामिन सी के केवल दो विनिर्माता हैं जो अम्बालाल साराभाई एन्टरप्राइजेज लि० और जयन्त विटामिन्स लि० (जो अक्टूबर, 96 से विटामिन्स-सी का उत्पादन स्थगित कर चुके। याचिकाकर्ता प्रतिमाह 40-45 टन की सामान्य दर पर विटामिन्स-सी का उत्पादन करता आ रहा है। याचिकाकर्ता के संबंध में बिक्री की मात्रा जो अप्रैल, 96 में 42.96 मी० टन थी वह दिसम्बर, 96 में घटकर 28.45 मी० टन तक हो गई थी।

(4) बिक्री आय:—जाँच-अवधि में बिक्री आय, जो अप्रैल, 96 में 544.25 रु० प्रति कि०ग्रा० थी वह दिसम्बर, 96 में घटकर 538.20 रु० कि०ग्रा० तक हो गई हालाँकि (95-96 में) 533/- रु० से इसमें मामूली वृद्धि होकर (जाँच अवधि में) 938/- रु० हो गई।

(5) स्टॉक: याचिकाकर्ता के पास विटामिन्स-सी का स्टॉकशून्य (1994-95) से बढ़कर 0.67 मी० टन (1995-96) और 16.93 मी० टन (जाँच अवधि) तक हो गया। हालाँकि घरेलू उद्योग ने पिछले वर्ष की तुलना में जाँच अवधि के दौरान अपना उत्पादन बढ़ाया था तथापि, वह स्टॉक में तब से घाटा हो जाने के कारण बढ़ी हुई मात्रा में बिक्री नहीं कर सका।

(ग) लाभ/हानि: मैसर्स अम्बालाल साराभाई एन्टरप्राइजेज एक बहु-उत्पाद कंपनी है। कंपनी का लेखापरीक्षित तलन पत्र कुल मिलाकर यह दर्शाता है कि लाभ में अत्याधिक कमो आई है। जिस कंपनी ने वर्ष 1994-95 में 1007.25 लाख रुपये का लाभ दर्ज किया था, वह 1995-96 में घटकर 430.51 लाख रुपये तक आ गया।

केवल विटामिन्स-सी का कारोबार, जिसने 94-95 में 252.65 लाख रुपये का लाभ दर्ज किया था वह 95-96 के दौरान घटकर 131.52 लाख रु० हो गया और उसे जाँच-अवधि में 93.98 लाख रुपये का घाटा हुआ। इसके अतिरिक्त, उत्पादन लागत 1995-96 में 533.22/- रुपये प्रति कि०ग्रा० से बढ़कर जाँच-अवधि में 562.68 रुपये प्रति कि०ग्रा० तक हो गई।

(2) प्राधिकारी पूर्वोक्त से यह नोट करते हैं कि:

(i) विषयाधीन देशों से आयात की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है;

(ii) परवर्ती महीनों में की जाने वाली सुपुर्दगियों की वर्धमान न्यूनतम दरों पर विटामिन-सी की आपूर्तियों के लिए निर्यातकों द्वारा संबिदाप निर्यातित की गयी थीं। इससे भारतीय उद्योग को अपने उत्पादन में अत्याधिक कटौती करने के लिए बाध्य होना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन-लागत में

वृद्धि हुई। इससे भी घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में कमी आयी;

(iii) भारतीय बाजार में कीमतों में कमी विषयाधीन देशों से हुए आयातों के कारण आई;

(iv) जांच-अर्वाध के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में तेजी से गिरावट आई;

(v) जांच-अर्वाध में घरेलू उद्योग के पास विषयाधीन माल के स्टॉक में वृद्धि हुई;

प्राधिकारों यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को विषयाधीन देशों के मूल के विटामिन-सी के आयात से वास्तविक क्षति हुई है।

कारणात्मक संबंध :

13 यह निर्धारण करने के लिए कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा :

(i) विषयाधीन देशों से उत्पाद के आयात की मात्रा में भारी वृद्धि हुई जिससे भारत में इस उत्पाद का उत्पादन और उसकी खपत प्रभावित हुई। कुल आयातों में विषयाधीन देशों के हिस्से में भी अत्यधिक वृद्धि हुई। प्रत्यक्ष परिणामी स्वरूप घरेलू उद्योग की बाजारगत हिस्सेदारी में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी आयी, जिसके परिणामस्वरूप बोजक स्तर में तेजी से वृद्धि हुई।

(ii) पाटित-मूल्यों पर विषयाधीन देशों से हुए विटामिन-सी के अत्यधिक आयातों से घरेलू उद्योग को उत्पादन-लागत से काफी कम मूल्यों पर बिक्री के लिए बाध्य होना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय हानियाँ हुईं।

अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति विषयाधीन देशों से पाटित आयातों के कारण हुई थी।

भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

14. पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य यह है कि सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त किया जा सके जिससे भारतीय उद्योग को नुकसान हो रहा है। तथा भारतीय बाजार में पुनः खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति लाई जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है।

15. यह माना गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से विटामिन सी के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप निर्यात बाजार में उनके उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी, विशेषकर तब, जबकि लगाने वाले पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुए नुकसान को कम करने के लिए आवश्यक राशि तक ही सीमित कर दिया जाए। इसके विपरीत पाटनरोधी शुल्क लगाने से डम्पिंग द्वारा प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को समाप्त किया जा सकेगा भारतीय उद्योग के ह्रास को रोक जा सकेगा और इस प्रकार संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। प्राधिकारी ने नोट किया कि पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

16. घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए आवश्यक पाटनरोधी शुल्क की मात्रा का पता लगाने के लिए प्राधिकारी ने भारत में विटामिन सी के उचित बिक्री मूल्य पर निर्धार किया है और इस संबंध में घरेलू उद्योग के लिए उत्पादन की ईष्टतम लागत और उचित लाभ पर विचार किया है।

17. भारत सरकार द्वारा लगाया गया आयात शुल्क घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति की मात्रा के निर्धारण में संगत है और इसलिए इस पर ध्यान दिया गया है।

निष्कर्ष:

18 प्राधिकारी ने पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि :

(i) जापान और चीन मूल के अथवा वहां से निर्यातित विटामिन सी का भारत को निर्यात उसके मूल्य से कम पर किया गया, जिसके परिणाम-स्वरूप डम्पिंग हुई;

(ii) इन देशों से विटामिन सी के आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;

(iii) यह विचार किया गया कि क्या डम्पिंग मार्जिन से कम शुल्क लगाना क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा। इस उद्देश्य के लिए प्रत्येक निर्यातक द्वारा किए गए आयातों की औसत भारत पहुंच कीमत की तुलना घरेलू उद्योगों की उचित बिक्री कीमत से की गई जो कि जांच अर्वाध के लिए निर्धारित की गई थी। जहां यह अंतर डम्पिंग मार्जिन से भी कम था वहां डम्पिंग मार्जिन से कम शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है। तदनुसार प्राधिकारी यह सिफारिश करता है कि इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तिथि से इन देशों से उद्योग वाले या वहां से निर्यात किए जाने वाले विटामिन सी के सभी आयातों पर सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष 2936.27 के अन्तर्गत अन्तिम निपटान होने तक निम्नानुसार अर्न्तित प्रतिपाटन शुल्क लगाया जाए।

(रु प्रति किग्रा.)

देश, जहां से उत्पाद का उद्गम हुआ है या जहां से उसका निर्यात किया गया है।

	शुल्क की राशि
जापान	27.59
चीन	61.96

संबद्ध जात निर्यातकों, आयातों, अधिकारता और अन्य हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है। जो अपने विचारों से अवगत कराना चाहते हैं, वे इस पत्र के जारी होने की तिथि से 40 दिनों के भीतर आवेदन कर सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन जांच परिणामों के प्रकाशन को लागू से 40 दिनों के भीतर विचार रख सकती है।

रति विनय झा, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE**NOTIFICATION**

New Delhi, the 11 March, 1998

PRELIMINARY FINDINGS

Subject : Anti dumping investigation concerning imports of Vitamin-C from China PR & Japan-Preliminary Findings

No.10/1/97/ADD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed with regard to the present investigation:

a. The Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above Rules, received written petition from M/s Ambalal Sarabhai Enterprises Ltd. alleging dumping of Vitamin C(Ascorbic Acid) originating in or exported from Japan and China PR;

b. The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were pointed out to the petitioners;

c. The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner, decided to initiate investigations against alleged dumped imports originating in or exported from Japan and China(hereinafter referred to as the subject countries). The Authority notified the Embassies of the subject countries on receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rules;

d. The Authority issued a public notice dated 26.5.97, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of Vitamin C, originating in or exported from Japan and China.

e. The Authority forwarded copy of the public notice to the known exporters/importers (whose details were made available by the petitioner) and gave them an opportunity to make their views known in writing, within forty days, in accordance with the rule 6(2);

f. The Authority forwarded copies of the public notice to the known importers of Vitamin C in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;

g. Request was also made to the Central Board of Excise & Customs (CBEC) to arrange copies of all the relevant Bills of Entries for the period of investigation i.e. April to December '96. No information has, however, been received from the CBEC;

h. The Authority provided copies of the petition to the known exporters and the Embassies of the subject countries in accordance with rule 6(3) supra;

i. The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information to the following exporters:

- Takeda Chemicals Industries Ltd., Osaka, Japan
- Hebei Welcome Pharma Co., Shigiz huang, China
- National Chemicals and Pharmaceutical Corporation (NCPC), Shigiazhuang China

The following exporters filed responses to the questionnaire within the stipulated/ extended time.

1. Takeda Chemicals Industries Ltd., Osaka, Japan. (TCI)
(M/s Takeda Vitamins & Food Asia Pte Ltd, Singapore) (TVFA)
2. Hebei Welcome Pharma Co., Shigiaz huang, China

j. A number of exporters, importers and consumers requested for extension of time, which was allowed by the Authority till 15.10.97. The Authority holds that there is no provision for obtaining or waiting for responses from all the interested parties or giving any additional time to those interested parties from whom the Authority had not specifically called for information in the first instance.

k. The Embassies of Japan and China in New Delhi were informed about the initiation of the investigation in accordance with rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, alongwith petition and exporter's questionnaire was sent to the Embassies also alongwith a list of known exporters/producers;

l. The questionnaire was sent to the following known indenting agents and importers of Vitamin C in India, calling for necessary information in accordance with rule 6(4);

1. Anglo French Drugs (Easter) Ltd., Bangalore
2. American Remedies, Madras
3. Bharat Laboratory Suppliers, Bombay
4. Crystal Pharmaceuticals, Calcutta .
5. C J Shah & Company, Bombay
6. Concepe Pharma Ltd., Bombay
7. Chemle Pharma
8. Dillip Kumar & Company, Bombay
9. Eros Pharma, Bangalore
10. Fourts (I) Labs Pvt. Ltd., Madras
11. Glaxo India Ltd., Bombay
12. Gracure Pharmaceuticals Ltd., New Delhi
13. Khanna Pharma, Delhi
14. K. Seventilal & company, Bombay
15. LARK Chemicals & Company, Bombay
16. Lalchand Bhimraj, Bombay
17. Merit Organics Ltd., Bombay
18. Mercury Labs Ltd., Bombay
19. Medley Labs, Bombay
20. Medi Pharma Drug House, Bombay
21. Nemi Pharma Pvt. Ltd., Bombay
22. Puja Enterprises, Bombay
23. Pradip Kumar & Company, Bombay
24. Pharmaceutical India, Bombay
25. Recon Ltd., Bangalore
26. Remidex Pharma P. Ltd., Bangalore
27. Stride Pharma Ltd., New Bombay
28. Sunways Pvt. Ltd., Bombay
29. Taru Enterprises, Bombay
30. Turakha Bros, Bombay
31. T H Thakore Pharma Labs, Bombay
32. Tablets India Ltd., Madras

m. Information regarding the domestic industry was sought from the petitioners, M/s Ambalal Sarabhai Ltd., Baroda and the other non-petitioner M/s Jayant Vitamins Ltd. Information deemed necessary was verified by the Authority.

n. No information was furnished by M/S Jayant Vitamins Ltd.

o. Cost investigations were also conducted for the purpose of Preliminary Findings to work out optimum cost of production and cost to make and sell Vitamin C on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be enough to remove injury to the domestic industry;

p. The investigation covers the period starting from 1st April, 1996 to 31st December, 1996.

B. PETITIONERS' VIEWS

2. The petitioners have raised the following major issues in their petition and in their subsequent submissions to the Designated Authority:

On Dumping:

- i. In China, with no labour and power cost charged to units, they could afford to slash the prices and dump goods for quick hard currency and gain world wide market share;
- ii. Chinese exporters increased market share from under 1 % in 1980 to approximately to 20% in the year 1996;
- iii. Prices of Vitamin C imported from China declined from Rs. 424 per kg to Rs. 258 per kg in a year;

On Injury:

- i. Vitamin C is a drug, the prices of which are controlled under Drug Price (Control) Order and the price control has been in force from the year 1970 onwards;
- ii. Import of Vitamin C in to the country is permitted under the Import Trade Policy under OGL;
- iii. General reduction in the custom tariff from 65% to 40% in the month of February, 1996 has helped the exporters to sell the said product at low prices to India;
- iv. M/s Jayant Vitamins Ltd, producer of Vitamin C have suspended operations from September, 1996;
- v. M/s Jindal (2000 t) and NATCO(4000 t) have abandoned their new projects;

C. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES:-

3. The views expressed by exporters, importers and other interested parties who have responded to the Authority are as under:-

EXPORTERS**1. M/s T.C.I. Japan:**

No views have been expressed directly by the manufacturer. However, the views expressed by M/s Takeda Vitamins and Food Asia Pte. Ltd., Singapore, a wholly owned subsidiary of Takeda Chemicals Industries Ltd., Japan, are:-

- TCI in Osaka have nothing to do with the trade to India;
- TVFA was assigned to cover all Asian countries except Korea, Thailand and Japan for sale of Vitamin 'C' and food additives manufactured by TCI, Japan;
- TCI must be indemnified from charge of dumping and investigation;
- Due to continued imbalance in demand and supply of Vitamin C, the prices are tending to fall sharply;
- The prices of Vitamin C have been falling steadily since 1995 and their prices have always been in tune with the international prices.
- The total demand for Vitamin C is more than that produced locally;
- China has emerged as a largest supplier of Vitamin C in the world market;
- In case the domestic industry feels that there is dumping of Vitamin C, they should be in a position to export the material at prices higher than that prevailing in international market, to prove their claim;

2. M/s Hebei Welcome Pharma Co., China

M/s Hebei Welcome Pharma Co., China have attached some invoices pertaining to exports to India during 1996, duly certified by Indian embassy in Beijing. They have also stated that the products were exported to India at the same price as that sold in Chinese domestic market.

Importers:

(1) M/s Dillip Kumar and Company have stated that :

- M/s Ambalal Sarabhai are the only manufacturer of Vitamin C in India and their total capacity is less than 20% of total Indian demand.
- Huge manufacturing capacities of Vitamin C in Germany, Swiss, Japan & China tend to affect the supplies and the international price of the product;
- That the Japanese material is costlier compared to prices of Chinese material and they strongly oppose not to enforce any anti-dumping duty on Japanese material.
- It is well known fact that Swiss & German material are also available at the same level as Japanese material in International Market;
- The Authority may charge anti-dumping duty on Chinese material as cif prices are too low, and may be affecting Indian manufacturers;

(2) GLAXO: The company have submitted that the capacity of two Indian manufacturers is far below requirement and the majority of the requirements is to be met by imports. As long as the supplies from the two indigenous manufacturers were reasonably regular, their purchases has been totally with them. Their first import in March 96, was at a landed cost of Rs. 631/kg. as against the prevailing local price of Rs. 539/-kg. The price drop has been not only in relation to supplies from

China and Japan but also the other European suppliers like Toche Hoffman, E. Merck and BASF.

D. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED

4. The statements made by the exporters, importers, petitioners, consumers and other interested parties have been examined and considered and have been dealt with at appropriate places in this notification.

E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND SCOPE OF INVESTIGATION

5. The product considered in the present investigation is Vitamin- C/ Ascorbic Acid originating in or exported from China or Japan. The product is classified under Heading 2936.27 of Custom Tariff Act. The classification is, however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigations.

F. LIKE ARTICLES

6. The article i.e. Vitamin C(manufactured) by the domestic industry is a like article to the product under consideration. The petitioners have claimed that the basic manufacturing process of this product in the domestic industry in India is also almost the same as that of the foreign producers. The Vitamin-C produced and sold by the domestic industry is, therefore, considered as like article to the Vitamin C imported from the subject countries within the meaning of rule 2(d).

G. DOMESTIC INDUSTRY

7. The petition has been filed by M/s Ambalal Sarabhai Enterprises Ltd on behalf of the domestic industry. The petitioners having produced 344 MT account for around 76% of the total production of 454 MT during the period of investigation. M/s Jayant Vitamins Ltd, who also manufacture Vitamin C have produced only 110 MT during April-September, 1996 have however, closed down their plant in September 1996 and are non-petitioners. Being the only producer of Vitamin C in the country, the petitioner constitute domestic industry in accordance with rule 2(b) supra.

H. NORMAL VALUE:

8. The Authority had sent the questionnaires to the exporters to furnish information so that Normal Value could be worked. M/s TCI, Japan have not submitted any information directly on the grounds that TCI has nothing to do with the trade in India. However, M/s Takeda Vitamin and Food Asia Pte. Ltd., Singapore, (TVFA) the wholly owned subsidiary of TCI, Japan has filed response in capacity of a subsidy company of TCI. The Authority observes that TVFA has submitted information only with regard to domestic market of Singapore and not with respect of Japan. Further, information regarding price structure and sales arrangement has

also not been furnished claiming confidentiality of agreement with their contractors. Takeda has also not submitted the cost of production on the grounds that they are traders/exporters and do not manufacture the product themselves. TVFA has submitted some extracts of their P&L Account but no financial information of TCI, Japan has been submitted. It may also be noted that information with regard to costs incurred after the removal from the factory has also been claimed confidential and not included in the response to the questionnaire.

The Authority notes that the information submitted by Takeda is selective and sketchy, and would not render any assistance in determination of a comparable Normal Value in the domestic market of the exporting country. While some information has been provided in respect of domestic prices in Singapore, the Authority observes that the Normal Value is required to be determined on the basis of the price prevailing in the country of origin in terms of proviso to Section 9A(1)c if the goods are merely transhipped through the country of export.

Based on the above, the Authority considers that TCI has not cooperated in the present investigations. The Authority has proceeded with the determination of Normal Value on the basis of evidence available on record in terms of rule 8 supra.

ii. M/s Habei Welcome Pharma Co., China:- Apart from furnishing three invoices pertaining to export, company has furnished details of exports to India month-wise for the period of investigation. Similarly, another statement showing prices in domestic market has been furnished which lacks supporting details of consignment/bills sold to domestic market. The company has not furnished total cost of production alongwith reconciliation with financial accounts.

iii. The Authority notes that the response is not as per the prescribed Exporter's Questionnaire. The company has not furnished supporting documentary evidence regarding their domestic sale for the period of investigation and have not claimed any adjustments for the domestic price. Hence, normal value has been assessed based on the constructed cost of production of Vitmin C in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling & general costs and profits as determined in accordance with the Rules made under sub-section(6).

1. Export Price:

9. The petitioner has submitted copy of Chemical Weekly for the period of investigation to show the export price of the product from Japan and China. The Authority has, however, relied upon Government Statistics available for the period April -Dec 96, from DGCIS, Calcutta. The CIF prices works out to Rs 319.89/kg for Japan and Rs 296.26/kg for China. M/s TVFA has furnished adjustments "after FOB price" for overseas freight, insurance, shipping charges, handling etc,. The Authority has allowed adjustments on the basis of the claims made by TVFA.

Similarly, the adjustments in respect of overseas freight (from Xingang to Mumbai), and clearance charge as furnished by the Chinese Exporter have been allowed to work out the FOB price.

J COMPARISON

10. For the purpose of fair comparison between the normal value and the export price, the Authority took into account the information furnished by the petitioner, exporters, importers and the best information available with the Authority in the absence of complete response in the prescribed form and manner from the exporters. The Authority has compared normal value with weighted export price (both at ex-factory level) for individual exporter and has arrived at the following dumping margins:

Rs./kg	
Country	Dumping Margin **
Japan(All Exporters)	58.10
China(All Exporters)	48.75

** percentage of export price

K INJURY

11. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such findings shall involve determination of the injury to the domestic industry, "...taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on the prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...". In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Rule (iii) of the Annexure II to the Rules requires that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigation, the Authority will cumulatively assess the effect of such imports. Such assessment can, however, be made only if it is determined that the volume of the imports from each country is three per cent of the import of the like article in India, and

In the present case, the dumping margin in respect of each exporter as also each country is more than the limits prescribed. Further, cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in the light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article. The Authority has, therefore, cumulatively assessed the effects of these imports on the domestic industry.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

a) Volume of dumped Imports:

Imports from China increased from 44.8 MT (1994-95) to 59.7 MT (1995-96) and were 294 MT (392 MT on annualised basis) during the investigation period (April-December, 1996) and in case of Japan imports increased from zero level (1994-95) to 0.7 MT (1995-96) and upto 101.06 MT (135 MT on annualised basis) in the investigation period. The percentage increase in import of the product during the year 1996-97 (Annualised) is around 656% in respect of China & 19668 % in respect of Japan. The above trend would reveal that there is significant increase in the volume of imports from the said countries.

The market share of Japan in the total demand in the country increased from 0.08% in 1995-96 to 10.61% during the period of investigation. In case of China, increase was from 6.49% in 1995-96 to 29.41% during the period of investigation.

b. Factors affecting domestic industry:

(i) Production:

Production of the domestic industry during 1994-95 was 1030.6 MT (469 MT of Ambalal Sarabhai Enterprises and 561.6 MT of Jayant Vitamins Ltd.). The production decreased in 1995-96 to 918.4 MT (486 MT in case of Ambalal Sarabhai Enterprises and 432.4 MT in case of Jayant Vitamins Ltd.). The combined production reduced to 496.3 MT during the period of investigation (386 MT in case of Ambalal Sarabhai Enterprises and 110.3 MT in case of Jayant Vitamins Ltd.). Domestic industry lost market share from 91.2% in 1995-96 to about 48% during the period of investigation. M/s Jayant Vitamins Ltd. was forced to suspend their production activity w.e.f. October 1996 due to dumping of the said product and did not participate in the anti-dumping investigations.

(ii) Price Undercutting:

It has been contended by the Petitioner that from April, 1996 the subject countries have been dumping the material into the country at exceptionally low prices ranging from Rs. 296/kg - 320/kg.(cif), with a view to eliminate local competition. The landed prices after considering the duty works out to 431/kg. to 465/kg. as against the average selling price of Rs. 537/kg during the P O I, clearly indicating the price undercutting. As a result there is a drop in the sales volume also.

(iii) Decline in sales volume:

There are only two manufacturers of Vitamin-C in the country namely, Ambalal Sarabhai Enterprises Ltd. and Jayant Vitamins Ltd. (who have suspended production from October 96). The petitioner has been producing Vitamin-C at the normal rate of 40-45 tonnes per month. The volume of sale in respect of petitioner which was 42.96 MT during April 96 declined to 28.45 MT in Dec 96.

(iv) Sales Realisation:

Sales realisation during the period of investigation, which was Rs.544.25/kg in April 96 declined to Rs.538.29/kg in Dec 96, though the same marginally increased from 533/-(95-96) to Rs. 537(POI).

(v) Stocks:

Stocks of vitamin C with the petitioner increased from nil(1994-95) to 0.67 MT (1995-96) and 16.93 MT (Investigation period). Even though the domestic industry increased its production in the investigation period as compared to the previous year, it could not sell the increased volumes resulting in steep increase in stocks.

c. Profit/loss :

M/s Ambalal Sarabhai Enterprises is a multi-product company. Audited Balance Sheet of the company as whole shows that there is a steep decline in profits. The company which registered a profit of Rs. 1007.25 lakhs during 94-95, declined to Rs. 430.51 lakhs during 95-96. The operating results for only Vitamin C, which registered a profit of Rs. 252.65 lakhs during 94-95 declined to Rs.131.52 lakhs during 95-96 and posted loss of Rs.93.98 lacs during the period of investigation. Further, the cost of production increased from Rs.533.20/kg during 95-96 to Rs.562.68/kg during the period of investigation.

12. Authority notes from the foregoing that:

- i. The imports from the subject countries have increased in absolute terms;
- ii. The exporters entered into contracts for supplies of Vitamin C at increasingly lower rates for deliveries to be made in the subsequent months. This forced the Indian industry to drastically cut down their production resulting in increase in cost of production. This has also eroded the profitability of the domestic industry
- iii. The imports from the subject countries resulted in price under cutting in the Indian market;
- iv. Sales of domestic industry declined steeply in the investigation period;
- v. Stocks of subject goods with the domestic industry increased during the period of investigation;

Authority notes that the domestic industry has suffered material injury from imports of Vitamin C originating from the subject countries.

CAUSAL LINK

13. In determining whether material injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts:

(i) The imports of the product from the subject countries increased significantly in absolute terms and relative to the production and consumption of the product in India. The share of the subject countries in the total imports also increased significantly. As a direct consequence, the domestic industry lost market to a significant level, resulting in steep increase in inventory level.

(ii) The substantial imports of Vitamin-C from the subject countries at dumped prices forced the domestic industry to sell at prices significantly below cost of production resulting in financial losses.

The Authority has thus arrived to the conclusion that material injury to the domestic industry was caused by the dumped imports from the subject countries.

INDIAN INDUSTRY'S INTEREST AND OTHER ISSUES

14. The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

15. It is recognised that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using Vitamin-C and consequently might have some influence on relative competitiveness of this product. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by anti dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is limited to the amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

16. To ascertain the extent of Anti dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority has relied upon reasonable selling price of Vitamin-C in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production and reasonable profit for the domestic industry.

17. The import duty imposed by the Government of India has relevance in determination of the extent of injury suffered by the domestic industry and has been accordingly taken care of.

CONCLUSIONS

18. The Authority concludes, after considering the foregoing, that:

i. Vitamin-C originating in or exported from Japan and China has been exported to India below its normal value, resulting in dumping;

ii. Imports of Vitamin-C from these countries have caused material injury to the domestic industry.

iii. It was considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove the injury. The weighted average landed price of the imports for each exporter, for the purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigation. Whenever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, the Authority recommends that provisional anti dumping duties, as set out below, be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of Vitamin-C, falling under Customs Tariff Heading 2936.27 of the Customs Tariff Act, originating in or exported from these countries, pending final determination.

(Rs. per kg.)

Product originating or exported from	Amount of Duty
Japan	27.69
China	61.96

The known exporters, importers, petitioners and other interested parties are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority

